

27/4/26

पचावली पेय इ०) कविमता धरि नही
पार्ले ललवी कावणे लगाई गई। कालवत
वकालवत गाई धरि नही धैरे पर
पचावली कावण पेयी। कावण धरि
मे शारिणी जी लाली ही पचावली
कोसला ऐकल हाखिल हामल घै